BBA-105:

Hindi

Max. Marks: 100
External Assessment: 80
Internal Assessment: 20

उद्देश्य : प्रस्तुत प्रश्न-पत्र का उद्देश्य वाणिज्य एवं प्रबन्धन से जुड़े विद्यार्थि का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना है, ताकि वे जनसामान्य तक अपनी सकें ।

राजभाषा अधिनियम, राष्ट्रपति के अध्यादेश तथा केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण –योजना ।

पत्राचार के विविध रूप (मूल पत्र, पत्रोत्तर, पावती, अनुस्मारक, अर्द्धसरकारी, ज्ञापन, परिपत्र, आदेश, पृष्ठांकन, अन्तःविभागीय टिप्पण, निविदा सूचना, विज्ञापन, प्रैस विज्ञप्ति, प्रैस नोट, प्रतिवेदन)

अनुवाद : स्वरूप, प्रकृति, प्रक्रिया, वर्गीकरण, व्यावहारिक अनुवाद (प्रदत्त अंग्रेजी/हिन्दी अनुच्छेद का अनुवाद), अनुभाषण (आशु अनुवाद)
पल्लवन : परिभाषा, प्रक्रिया और गुण
संक्षेपण : परिभाषा, विधि और गुण

पारिभाषिक शब्दावली (मंत्रालयों, उपक्रमों, निगमों, बैंकों, रेलवे-क्षेत्रों, रोडवेज तथा दूरदर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन)

निबन्ध-लेखन (निम्नलिखित विषयों में से चार-पांच विषय दिए जायेंगे, जिनमें से लगभग 300 शब्दों पर आधारित एक निबन्ध लिखना होगा)

1. वाणिज्य अध्ययन में हिन्दी की उपयोगिता
2. उपभोक्ता, बाजार और वाणिज्य
3. बैंक और वाणिज्य
4. कुशल प्रबन्धन और वाणिज्य
5. विज्ञापन और वाणिज्य
6. वाणिज्य विकास में कम्प्यूटर की भूमिका
7. श्रमिक असंतोष का उद्योग जगत पर प्रभाव
8. जनसंख्या : वृद्धि का राष्ट्र-समृद्धि पर प्रभाव
9. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष
10. निजीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव
11. वैश्वीकरण और भारतीय उद्योग
12. महंगाई
13. काला धन
14. ऊर्जा संकट
15. लघु उद्योगों का भविष्य

संदर्भ ग्रन्थ

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी : राजनाथ भट्ट, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला–2004.
2. अनुवाद विज्ञान : राजमणि शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला –2004.
3. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण : विराज, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली –2005.
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी के छः अध्याय, दर्शन कुमार जैन, लिपि प्रकाशन, अम्बाला छावनी–1996.